मुख्य परीक्षा

प्रश्नः-"जो नैतिक है वही कानून है।" इस सन्दर्भ में विधिक कार्यवाहियाँ नैतिकता से असंगत और पूरक दोनों हैं। विश्लेषण कीजिए। **(250 शब्द)**

"What is ethical is law" In this context, legal proceedings are both contrary and complementary to ethics. Analyse.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

उत्तरः- उत्तर में निम्नलिखित भाग का समावेश होना चाहिए-

1. एक संक्षिप्त परिचय, जिसमें यह बताएं कि विधि और नैतिकता में क्या संबंध है।
2. उदाहरण देते हुए बताएं कि ये दोनों अर्थात् विधि और नैतिकता कब एक-दूसरे के विपक्ष में या विपरीत खड़े हो जाते हैं।
3. पुनः उदाहरण देते हुए बताएं कि विधि और नैतिकता किस प्रकार एक-दूसरे के पूरक हैं।

- विधि की उपस्थिति यह बतलाती है कि जनता की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं और अनिवार्यताओं को पूरा करने के लिए प्रशासन उपलब्ध है क्योंकि प्रशासन विधि के माध्यम से ही कार्य करता है।
- एक पुरानी कहावत है कि "यदि कुछ गैर-कानूनी नहीं है, तो यह अवश्य ही नैतिक होगा।" आधुनिक विधिक कार्यवाहियों के संदर्भ में यह पूर्णतया दोषपूर्ण है। नीतिशास्त्र और विधि उतने ही एक-दूसरे से भिन्न हैं, जितना कि 'लागू करना, लागू न करने' से भिन्न है।
- समाज के कुछ सुनिश्चित नियम होते हैं, जिन्हें राज्य द्वारा वैधता प्रदान की जाती है। ये नियम नैतिकता के उस धरातल को प्रतिबिंबित करते हैं, जो इतने व्यापक हैं कि समाज उन्हें स्वीकारते हुए एक साथ कहता है कि "यही नैतिक आचरण सर्वमान्य होगा।"
- विधिक ढाँचे और नीतिगत ढाँचे का परस्पर अद्भुत संबंध है, जैसे- भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के समय "सविनय अवज्ञा की नैतिकता।" यहाँ सविनय अवज्ञा का तात्पर्य है नियम पूर्वक अन्यायपूर्ण कानूनों का पालन नहीं करना। महात्मा गाँधी जी द्वारा इसका प्रभावशाली उपयोग एक वैधानिक सरकार के विरूद्ध किया गया था। इसी प्रकार सविनय अवज्ञा का उपयोग दक्षिण अफ्रीका में रंग-भेद नीति और अमेरिका के नागरिक अधिकारों के आंदोलन में उस समय के अन्यायपूर्ण कानूनों का विरोध करने हेतु किया गया। सविनय अवज्ञा में कानूनों का पालन न करने के लिए नैतिक कारणों की आवश्यकता होती है। इस सन्दर्भ में विधिक कार्यवाहियाँ और नैतिकता एक-दूसरे के असंगत हो जाते हैं।
- जहाँ नीतिशास्त्र की अनदेखी होती है तो विधि तुरंत ही उस रिक्त स्थान को भरने आ जाती है। जैसे- स्वच्छता अभियान के सन्दर्भ में कि "हमें गंदगी नहीं करनी चाहिए क्योंकि लोगों के द्वारा गंदगी नहीं की जाती है, अपितु इसलिए कि गंदगी करना गलत बात है।" अब हम गंदगी इसलिए नहीं करते कि इस प्रकार का कृत्य करने पर हमें आर्थिक दंड का भुगतान करना पड़ता है। जो कभी नैतिकता के दूसरे स्तर पर था, वही अब कानून के पहले स्तर पर आ गया है। इस सन्दर्भ में या उदाहरण में विधिक कार्यवाहियाँ या नैतिकता एक-दूसरे की पूरक भूमिका में हैं।